ISSN 2278-8808 IMPACT FACTOR: 1.38
An International Peer Reviewed
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

''नरेश मेहता के काव्य में नारी जीवन''

प्रा.गायकवाड हनुमंत येदू
न्यु आर्टस्, कॉमर्स ॲण्ड सायन्स कॉलेज, पारनेर, ता.पारनेर, जि.अहमदनगर हिंदी विभाग

यह तथ्य रेखांकित करना होगा कि नरेश मेहता का रचनाधर्म मानव को केंद्र में प्रतिष्ठित करता है । किसी प्रकार की परंपरानिष्ठता और हठधर्मिता से वशीभूत न होकर यह रचनाकार मानव की मुक्ति को अपने सृजन की आधारशिला मानते हैं । तदनुसार मानव स्वतंत्रता के पक्षधर बनकर कवि स्थाई मानव मुक्ति की दिशाओं का अन्वेषण करते हैं । वे व्यक्ति की सर्वतोमुखी मुक्ति पर बल देते हैं । व्यक्तिहित के जीवंत तत्वों को युगचेतना के अनुरुप ढालने की चेष्टा करते हैं । बन्धनों से मुक्ति की लगातार कोशिश इनकी कविताओं में सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है । कहना न होगा कि मानवीय संबंधों की प्रगाढता नरेश की कविता का प्राणतत्व है । पौराणिक अख्यानों को भी कवि नये परिप्रेक्ष्य में लेकर अपनी व्यापक मानवीय दृष्टी को संवेदनात्मक गरिमा प्रदान करते हैं । आगे मानव मुक्ति संबंधी कवि की नयी उद्भावनाओं की दिशाओं का अवलोकन करेंगे ।

नारी की स्वतंत्रता

छायावादी आदर्श नारी का प्रगतिवाद की 'पत्थर तोडनेवाली' नारी का चित्रण नयी कविता में नहीं । प्रयोगवाद और नयी कविता में नारी को एक अलग स्थान प्राप्त हुआ है । आज भारतीय नारी एक ओर विदेशी प्रभाव से भटक गयी है तो दूसरी ओर भारतीयता से जकडी है । आज की नारी में नारीसहज दुर्बलता नहीं है । वह पुरुष पर शासन करना चाहती है, उस पर जीत पाना चाहती है । उपर्युक्त विवेचन के आलोक में नरेश मेहता के काव्य में अंकित नारी स्वतंत्रता के स्वरुप पर आगे विचार करेंगे ।

नरेश मेहता के काव्य में नारी की स्वतंत्रता की भावना कहॉ तक दृष्टिगोचर है उसे देखना है । कवि की नारी भावना को व्यक्त करनेवाले हैं 'आखिर समुद्र से तात्पर्य', 'देखना एक दिन', 'पिछले दिनों नंगे पैरों' आदि काव्य संकलन और 'महाप्रस्थान', 'प्रवाद पर्व', 'शबरी' आदि खण्डकाव्य । पहले हम 'आखिर समुद्र से तात्पर्य' काव्य संकलन पर विचार करेंगे । नरेश मेहता स्त्री–पुरुष के समान अधिकार का पक्षधर है ।

पुरुष की पशुता, से भली भांति परिचित नरेशजी की 'परिभाषा' नामक कविता की प्रस्तुत पंक्तियॉ उनकी नारीभावना को उजागर करनेवाली हैं ।

'सिर से पैर तक
विवश देवत्व का नाम
स्त्री और सिर से पैर तक
आक्रामक पशुता का नाम पुरुष ।'[(1)]

''विज्ञना–गृह विज्ञान'' कविता में विद्युत के प्रकाश के बाद आनेवाले गर्जन को कवि ने पुरुष–विद्युत को प्रकाश की अनुगामिनी स्त्री मान ली है ।

बोला,
प्रकाश पुरुष है और गर्जन स्त्री
इसलिए स्त्री अपने पुरुष की अनुगामिनी होती है ।[(2)]

''सत्व की यात्रा'' कविता में कवि विधवा नारी की मुक्ति का चित्रण करके काल की गति में हुए परिवर्तन को रेखांकित करते हैं ।

वह विदुषी थी, या नहीं
नहीं जानता,
वह तापसी थी, या नहीं
नहीं जानता,
पर वह विधवा थी इतना सच है
और यह भी कि वह एक नारी थी । [(3)]

उनकी मान्यता है कि ''स्त्री शक्ति है, प्रेरणा है । वह सिध्द हो जाये तो आपको देवत्व की ऊँचाई तक पहुँचा सकती है लेकिन असिध्द होने पर वह रसातल में भी पहुँचा सकती है क्योंकि वह शुध्द ऊर्जा है ।[(4)]

मेहताजी ने नारी पर हो रहे अत्याचारों और धर्म के ठेकेदारों – जिन्होंने समाज में अशांति फैलाकर नारी को बंधनों में जकड़ा है – की झांकी 'सत्व की यात्रा' कविता की निम्न पंक्तियों मे दी है ।

एक दिन
साध्वी की भूषा में लिपटी उस नारी ने उतार दिए आवरण
लॉंधे तपासता के सारे चौखटे
और मुक्ति के लिए वरऩ करे किसी को
लौटा दी
अपने कीी अपनी ही नारी ।[(5)]

कवि के अनुसार सत्ता और स्त्री ही युद्ध, क्रूरता, विश्वासघात आदि का कारण होते हैं । इस शाश्वत सत्य को उद्‌घाटित करने का प्रयास 'पिछले दिनों नंगे पैरों' संकलन में कवि ने किया है ।

'देखना एक दिन' काव्य संकलन की 'स्त्री' नामक कविता में कवि का स्त्री संबंधी दृष्टिकोन दृष्टव्य है ।

स्त्री अपने एकान्त में ही
स्त्री होती है । बाकी समय
वह केवल संबंध होती है । (6)

'आज यदि कविता में कवि आधुनिक नारी के स्वभाव की ओर इशारा करते हैं ।

आज यदि हुआ होता
द्रौपदी का चीरहरण
न तो दर्योधन को ही निराशा होती
और न ही
दुःशासन की बॉहें थकती ।
स्वयं द्रौपदी की कहती –
अपनी पार्टी ओर नेता के लिए
चीर–हरण क्या
शील–हरण भी स्वीकार है ।
निश्चित ही
तब महाभारत न हुआ होता
और कितने पहले लोकतंत्र भी
स्थापित हो गया होता ।(7)

खण्डकाव्यों में नारी भावना

'महाप्रस्थान', 'प्रवाद पर्व' तथा 'शबरी' खण्डकाव्यों में भी कवि ने आधुनिक नारी के चिंतन को प्रस्तुत किया है । कवि स्त्री–पुरुष के समान अधिकार का पक्षधर है । उनके अनुसार जीवन के सुख–चैन तथा विकास के लिए स्त्री को पुरुष अनुगामिनी रहना है । लेकिन उसे स्त्री की विवशता की अनुगामिता बिलकुल स्वीकार नहीं हैं ।

महाप्रस्थान

आज की नारी पति के रुप में मन पसंद श्रेष्ठ पुरुष का वरण करना चाहती है । द्रौपदी की भांति आज कोई भी स्त्री पांच पुरुषों की भोग्या होना स्वीकार नहीं कर सकती । कवि ने द्रौपदी की इस विवशता को नारी का अपमान तथाा दुर्भाग्यपूर्ण स्थिती माना है । पंच पाण्डवों की पत्नी होते हुए भी द्रौपदी पार्थ के कारण ही पूर्ण हो सकी ।

''ब्राह्मण वेशी होन पर भी
वरा पार्थ ने,
किन्तु भाग्य ने

पंचपाण्डवों का भार्यापद मुझको सौंपा ।[8]

पंचपाण्डवों की पत्नी होने पर भी द्रौपदी के मन में जीवन के अन्तिम समय भी यह कॉटा चुभा रहा कि कृष्ण ने उसका वरण क्यों नहीं किया ?

''इसीलिए क्या आयोजित था
महास्वयंवर ?
कृष्ण उपस्थित होकर भी
अनुपस्थित क्यों रह गये ?
क्यों नहीं किया मत्स्य का भेदन
पूर्ण पुरुष ने ? [9]

यदी कृष्ण न होते
तो उस कृष्णा का क्या होता ?
न होती वैजन्ती
होती तुलसी ही
पर
क्यों हुई पृथक
मैं कृष्णा अपने भाव–कृष्ण से ?[10]

कवि के अनुसार अपने पति द्वारा वस्तु की भॉति जूए के दॉव पर लगा जाना तथा पति या प्रेमियों के देखते–देखते अन्य लोगों से अपमानित होना नारी के लिए कष्टकर स्थिती कोई नहीं है । अपने अपमान पर द्रौपदी को पाण्डव तथा दोनों पर ही क्रोध आता है । अपमान की चरमावस्था में पहुॅचने पर द्रौपदी ने अपने अपमान का प्रतिशोध कौरवों के वंशनाश से चाहा –

इतना अपमान
व्यक्ति को वस्तु बनाया
पण्या हो गयी
प्रियापदी कृष्णा !
इस भरी सभा में
नहीं
अब कौरव वंश नहीं रह सकता ।[11]

महाप्रस्थान में कवि ने द्रौपदी के माध्यम से नारी की वर्तमान स्थिती व समाज में उसके स्थान का स्पष्टीकरण किया है ।

प्रवादपर्व

'प्रवाद–पर्व' की सीता आधुनिक युग की चिंतनाप्रधान नारी का प्रतीक है । सीता इस बात से अच्छी तरह अवगत हैं कि उन्हें इतिहास और इतिहास पुरुष के पार्श्व में केवल एक प्रतिमा सा खडा होना है । बीच–बीच में घटनेवाली घटनाओं – वनवास, पंचवटी–निवास, अशोक वाटिका की प्रतिक्षा, आसन्न मातृत्व इत्यादि को सीता अपने दांपत्य जीवन का अविभाज्य अंग मानती हैं । वे जानती हैं कि इतिहास निर्माता घर–परिवार की भाषा में बात नहीं करते और न ही कभी वैयक्तिक जीवन जीते हैं । इसलिए सीता ने राम को बंधन में न बॉधकर स्वयं को बंधन में बांधा है । सीता चाहती हैं कि राम वैयक्ति संबंधों के आधार पर मुझे महत्व न दें । उनका मत है कि –

राज्य, न्याय और राष्ट्र
व्यक्तियों तथा
संबंधों से ऊपर होने ही चाहिए ।[12]

उपर्युक्त पंक्तियों में सीता के भारतीय नारी के पारस्परिक आदर्शों का निर्वाह तथा आधुनिक युग की विकसित जनतंत्रात्मकता के प्रति गहरी आस्था दृष्टिगोचर है ।

वे राम की अनुगामिनी मात्र न होकर उनकी सहधर्मिणी भी है । वे दुःखद घटनाओं को भी दाम्पत्यजीवन का अविभाज्य अंग मानती हैं । वे राम के साथ कभी भी साधारण नारी का जीवन नहीं जी सकती है, सदैव इतिहास पुरुष राम के पार्श्व में एक प्रतिमा की भांति खडी रही हैं । नरेश मेहता के मन में पत्नी का रुप पति की अनुगामिनी होने का है । इसलिए तो उनकी सीता कहती है –

मुझे अवगत था
आर्यपुत्र !
आरंभ से ही मुझे इसकी प्रतीति थी
कि मुझे
इतिहास और
इतिहास–पुरुष के पार्श्व में
केवल एक प्रतिमा–सा खडा होना है ।[13]

इस संदर्भ में डॉ.संतोष कुमार तिवारी का कथन विचारणीय है – ''नरेशजी ने प्रसंग की मौलिक अद्‌भावना द्वारा यह स्पष्ट कर दिया है कि सीता ने राम को यज्ञपुरुष के रुप में पाया था, सामन्य राजकुमार के रुप में नहीं ।'' [14]

'प्रवाद पर्व' की सीता जन–साधारण का अस्तित्व बनाये रखने के लिए राम से स्वयं के त्याग का प्रस्ताव रखती है । वे साधारण जन की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के पक्षधर है । अपनी चरित्र मर्यादा तथा राम की राजसी गरिमा की रक्षा के लिए सीता किसी भी प्रकार की परीक्षा के लिए तैयार हैं । वे स्वयं राम से कहती है कि अनाम साधारण जन की अअभिव्यक्ति की सुरक्षा के लिए यदि आपको

मेरा भी त्याग करना पडे तो कर दीजिए । यहॉ नरेश मेहता ने सीता को जनतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए तत्पर आधुनिक नारी के रुप में चित्रित किया है ।

निष्कर्ष :–

ऊपर के विवेचनात्मक अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर पहुॅचते हैं कि नरेश मेहता ने मानव की सर्वांगीण मुक्ति के लिए अपने रचनाधर्म को समर्पित किया है । मानव स्वातंत्र, मानवता की पहली शर्त है । कवि ने उससे भी आगे बढकर नारी स्वतंत्रता को प्राथमिकता प्रदान की है । इसकेलिए कवि ने सीता, द्रौपदी, शबरी इन पौराणिक नारी पात्रों के माध्यम से अपनी गहरी संवेदना अभिव्यक्त की है ।

कवि युगीन संदर्भ में नारी स्वातंत्र्य के विविध आयामों का प्रतिपादन करते हैं । नारी पर युग युगों से किय अत्याचारों और बन्धनों की ओर कवि इशारा करते हैं । महाप्रस्थान, प्रवादपर्व, शबरी आदि खण्डकाव्यों और छोट कविताओं के द्वारा कवि ने आधुनिक नारी की अस्मिता को प्रतिष्ठित किया है । 'शबरी' के द्वारा काव्य में कवि ने दलितों की मुक्ति का पक्ष लिया है । कवि ने दलित समस्या को व्यापक करुणा और मानवीय दृष्टी से उकेरा है । कवि ने शबरी को जागृति की ऊॅची स्थिती तक पहुॅचा दिया है जहॉ मानवीय मूल्यों की स्वीकृति सर्वोपरि है ।

संदर्भ एवं टिप्पणियॉ

1. नरेश मेहता, आखिर समुद्र से तात्पर्य, पृ.23
2. वहीं, पृ.19
3. वहीं, पृ.19
4. प्रभाकर क्षेत्रिय द्वारा साक्षात्कार पत्रिका के लिए, गए इन्टरव्यू के आधार पर अंक अप्रैल 1993
5. नरेश मेहता, आखिर समुद्र से तात्पर्य, पृ.54
6. वही, देखना एक दिन पृ.33
7. वहीं, पृ.41
8. वहीं, महाप्रस्थान, पृ.64
9. वहीं, पृ.63
10. वहीं, पृ.66, 67
11. वही, पृ.66
12. वहीं, प्रवाद पर्व, पृ.80
13. वही, रचना की प्रासंगिकता, पृ.71
14. डॉ.संतोष कुमार तिवारी